सियान के कोकानी लाठी

तइहा के सियान मन के गोठ-बात ए
नोहे कोनो कहानी,
मुड़ कै पके करिया केस मा छुपाय हे
जनम-जनम के बानी,
सुख-दुख के कतिको घाम-छांव ला
ओमन ह सहे हें,
आज हमन जउन रद्दा मा थोरकन
चलथन,
ओ रद्दा ला ओमन गढ़े हें,
हांथ मा धर के कोकानी लाठी,
जब सियान ह गली मा निकलथे,
ओकर एक तीस के अवाज मा,
तइहा के जुग ह खसकथे,
उही लाठी ह ओकर संगी हे,
उही ओकर सहारा आय,
बुड़ापा के ओ अधियार मा,
रद्दा देखावत अगवा जावय,
ओ कोकानी लाठी ह सिरिफ
एक सुक्खा लकड़ी नोहे जी,
ओमा तो सियान के बड़ गंभीर गोठ
अउ अनुभव पोथे जी,
जेन लाठी ह थामे हे
डगमगात गोड़ ला,
ओही सियान ह संजोय हे
आज घलो अपन पुरखा के तोर ला,
अतका सीख सिखाथे हम ला
ओकर टेड़गा मेड़गा लाठी,
रद्दा कतको बांका होवय,
कभू नइ छोड़ना हे अपन माटी,
सियान के गोठ ला मानव,
ओकर लाठी ला देवव सत्कार,
तभे तो बांचे रही
हमर छत्तीसगढ़ के मया अउ
संसकार।

नम्मू पामगढ़िया पामगढ़ छग

ये कल की पीढ़ी के लिए है



छोड़ो और छिड़को
घनघोर बारिश में
छुपता है और हंसता है
वह हरा मेंढक...
मेढक के मन में
बिन बरसे बरसे
बारिश...
उस बारिश का
कोई जल्दी नहीं...
जमीन पर

पानी में...
एमबी एमबी एमबी जंप
तैराकी धड़कता है
वह हरा मेंढक
उस मेंढक का
तैराकी में...
जीवित रहने में असमर्थ
जीवित मनुष्य का
स्थिति तो ऐसी लगती है...
उस बारिश का
कौशल में...
कटे हुए पेड़ों का
एक जली हुई जिंदगी
घबराहट से मुस्कुराते हुए...
कल की पीढ़ी के लिए!??!

ओत्तेरी सेल्वा कुमार 600012



दीप जलाएं

उम्मीदों के दीप बने हम
मिटे मूढ़ता का अंधियारा

ज्ञान - ज्योति हम लेकर निकले
हो जाए हर मन उजियारा।

हर मन मंदिर सा बन जाए
तम के सब बंधन कट जाए

घर का कोना - कोना दमके
नव चेतन का दीप जलाएं।

अपने उर में झाँक सके हम
सही गलत को आँक सके हम

तोड़ द्वेष की दीवारों को
प्रेम उत्स बन-बनके बहे हम।

दीप जले न केवल घर में
ऐसा हम त्यौहार मनाएं

ज्ञान,स्नेह,सद्भाव के दीपक
हर आंगन में चलो सजाएं।

सविता सिंह
बक्सर बिहार

हम नन्हें - मुन्ने अल्हड़ बालक

समझ के थोड़े कच्चे बालक ।
हंसते गातें खुशियां बाँटते ।
गली - गली में शोर मचाते ।
कौन - अमीर ?कौन - गरीब ?
कौन अपना कौन पराया ।
ये मतभेद नहीं जानते ।
हम तो सबको अपना मानते ।
दिखावे से न कोई नाता हमारा ।
नादानियों में ही बीतता दिन सारा हमारा
हर पल दिमाग में प्रश्नों की किताब
लिए फिरते हैं ।
मिल जाए अगर कोई उत्तर देने वाला तो
एक एक कर सारे प्रश्नों का अंबार लगा
देते हैं ।
जानने को कुछ नया हर पल जिज्ञासु
रहते हैं ।
अपने नन्हें - मुन्ने कदमों से
आँगन का कोना- कोना गुम आतें हैं,
दुनियादारी नहीं जानते ।
फिर भी अपनी मस्ती में रहते हैं।
हां हम ही नन्हें - मुन्ने अल्हड़ बालक
देश का स्वर्णिम भविष्य कहलाते हैं।
हां हम ही तो समाज का दर्पण और
नए परिवर्तन की शुरुआत कहलाते हैं



हर्षिता चौबीसा
mobile no.
_ 8306576330

गोवर्धन की पूजा

मथुरा वृंदावन गोकुल वासी
भगवान इन्द्र की पूजा करते थे ।
श्रद्धा भाव भक्ति से करते थे
वहीं तो उनके पालन हारे थे ।

द्वापर युग में भगवान कृष्ण ने
मथुरा में जब जन्म लिया था ।
कंश के बढ़ते अत्याचारों से
मुक्त कराने जन्म लिये थे ।

कारागार में जन्म लिया था
माता देवकी से जन्म लिये ।
पैदा होते ही लीला दिखाये
कारागार को सब खोल दिये ।

बासुदेव कारागार से कृष्ण को
नंदगांव यशोदा के घर पहुंचाये थे।
कन्या को वहां से कारागार में
देवकी के पास बापिस लाये थे ।

बचपन से ही कृष्ण ने अपनी
लीलाओं से राक्षसों को मारे थे ।
इन्द्र का घमंड तोड़ करके ही
गोवर्धन पर्वत अंगुली से उठाए थे ।

इन्द्र ने मूसलाधार बारिश करके
मथुरा गोखुल में त्राहि मचाई थी ।
कृष्ण ने इस संकट से बचा करके
ऐसे गोवर्धन की पूजा कराई थी ।

तभी से गोवर्धन की पूजा होती
जो दीपावली के दूसरे दिन होती है ।
विधि विधान से गोवर्धन जी की
पूजा श्रद्धा भाव भक्ति से होती है ।



डा अनन्तराम
चौबे अनन्त
जबलपुर

खुशी बांटते दीप



मन का अंधियारा हरें, भरें नवल उजियार।
दीप करें नहिं भिन्नता, बाटें मधुरिम
प्यार।।

गांव, गली, वन, वाटिका, खुशी बांटते
दीप।
महल झोपड़ी गेह को, सदा मानते मीत।

भेद-भाव करते नहीं, नहीं किसी से बैर।
दीप निभाते मित्रता, हों अपने या गैर।।

पौध रोपते ज्ञान के, राह करें आसान।
दीप गलाते हैं सदा, लोभ-मोह अभिमान।।

सघन तमस से जूझते, ज्योति जलाते
दीप।
परहित जीवन जी सदा, बनते उज्ज्वल
सीप।।

'मलय' दीप-सा हम जलें, करें जगत
उजियार।
दीप सिखाते हैं हमें, मानव जीवन सार।।

प्रमोद दीक्षित मलय
शिक्षक, बांदा, उत्तर प्रदेश
मोबा. 9452085234

कैसे दिन बीते राम, राम बिना रे

(माता कौशल्या की विरह वेदना)
कैसे दिन बीते राम,
राम बिना रे ।
कैसे दिन बीते राम.....
जबसे गए बन में दिन नाहिं चैना,
आंखों में निन्द नहीं बीते न रैना,
अंखियन के नीर बहत भैलें रीते राम ।
राम बिना रे ।
कैसे दिन बीते राम.....
सुनी रे डगरिया बन के अनजान रहिया,
कांट कुश कंकड़ पत्थर पग ना पनहिया,
पड़ि जैहें छाला पग में कैसे चलिहैं सीते राम ।
राम बिना रे ।
कैसे दिन बीते राम.....
बाघ सिंह भालू घाघ ,
घूमत होइहें विषधर नाग,
कठिन धरतिया पर कैसे नींद लेते राम ।
राम बिना रे ।
कैसे दिन बीते राम.....
मिलिहैं अहारी बन में कन्द मूल फलवा,
कबो उपवासे कबो पिवत होइहें जलवा,
पर्वत के हिम सम जलवा कैसे बाबु पीते राम ।
राम बिना रे ।
कैसे दिन बीते राम.....
मैं जननी बड़ निठुर अभागन राम,
देखत रहि गयो बनवां के गैलें राम,
जल्दी आना प्यारे नहिं तो पाओगे न जीते राम ।
राम बिना रे ।
कैसे दिन बीते राम.....



ब्रह्मेश्वर नाथ मिश्र
आरा, भोजपुर, बिहार

दीपों का त्योहार : दिवाली आई

दीपों का त्योहार लेकर, दिवाली आई है,
खुशियों की सौगात लेकर, दिवाली आई है।
मिटाने धरा से अंधकार की हर निशानी,
नई उम्मीदों की प्रभात लेकर, दिवाली आई है।

सूने-सूने आँगनों में, उम्मीदों के दीप जलें,
बिछड़े हुए रिश्तों के फिर से गुलशन खिलें।
हर दिल में प्रेम हो, हर चेहरे पर मुस्कान,
अपनों के संग खुशियों के नए मौसम मिलें।

नफ़रत की आँधियाँ थमें, प्रेम की गंगा बहे,
मन के कोने-कोने में सद्भाव का दीप रहे।
मिट जाए द्वेष, मिट जाए अहंकार का अँधेरा,
हर दिल में इंसानियत का उजियारा रहे।

मिट्टी का दीप हमको यह संदेश सिखलाता है,
खुद जलकर भी दूसरों के जीवन को चमकाता है।
त्याग, तपस्या और समर्पण की यही पहचान,
अँधियारे से लड़कर ही उजाला आता है।

न कोई छोटा, न कोई बड़ा, सबका सम्मान हो,
हर घर में खुशियों का सुंदर-सा जहान हो।
भूखे को रोटी मिले, प्यासे को पानी मिले,
हर चेहरे पर मुस्कान, हर दिल में अरमान हो।

आओ, इस बार कुछ ऐसा काम कर जाएँ,
किसी के सूने जीवन में खुशियाँ भर जाएँ।
नफ़रत के अँधियारे को प्रेम से मिटाकर,
मानवता के नाम एक दीप जला जाएँ।

दीपों का त्योहार है, खुशियों की बहार है,
हर दिल में प्रेम का सुंदर-सा संसार है।
घर-घर में उजियारा हो, मन में सद्भाव रहे,
दिवाली का यही तो सच्चा उपहार है।

आओ करें मनुहार, सबका कल्याण हो,
हर जीवन में सुख-शांति का नया विहान हो।
अंधकार पर प्रकाश की विजय का पर्व मनाएँ,
प्रेम और सद्भाव से जग का उत्थान हो।

लक्ष्मी का आशीष मिले, मेहनत को सम्मान मिले,
हर संघर्षरत इंसान को सफलता की पहचान मिले।
सपनों को पंख मिलें, मंजिल का रास्ता मिले,
हर जीवन को आगे बढ़ने का नया आसमान मिले।

दीप जलें तो केवल घर-आँगन रोशन न हों,
हर इंसान के हृदय में भी अँधेरे शेष न हों।
दिवाली का उत्सव तभी सार्थक कहलाएगा,
जब किसी की आँखों में दुख के आँसू न हों।

रूपेश कुमार
चैनपुर, सीवान, बिहार



सोच समझ कर बोलिए

सोच समझकर शब्द बोलिए, गलती मत कर मीत।
बैर भावना छोड़ो प्यारे, कर ले सबसे प्रीत।
काटे बन कर मत रहना रे, बनना सुंदर फूल।
कटुक वचन हैं तीर सरीखे, मत बोलो रे भूल।
दो दिन तुझ को मिले जगत में, सुख से बंदे काट।
हानि लाभ को सदा विचारो, चलो सोच कर बाट।
रिश्ते नाते तब बनते हैं, जब हो सद्भवहार।
सच्चा सौदा करना प्यारे, हो सुधरा व्यापार।
मीठी वाणी सदा बोलना, सबको लेना जीत।
क्रोध अहं को नित्य त्यागना, बढ़े सभी से प्रीत।
मानवता का यही मूल है, यह जीवन का सार।
जो भी बोलो,पहले तोलो, कर लो तनिक विचार।



किशोर धीमान
रैहन काँगड़ा हि. प्र.।

मोटू-पतलू की दीपावली

देखो-देखो मोटू-पतलू की दीपावली।
ऐसे मनाई मोटू- पतलू ने दीपावली।।
देखो - देखो मोटू----------।

बाजार जाकर मोटू पटाखें लाया।
फुलझड़ी बाजार से पतलू लाया।।
अपने दोस्तों को मोटू-पतलू ने बुलाया।
मिलकर घसीटा के संग दीपावली।।
देखो-देखो मोटू ----------।।

दीपावली पतलू गुलाबजामुन लाया।
मोटू समोसों का थैला भरकर लाया।।
डॉक्टर झटके ने ऐसा जादू दिखाया।
बनाने को धमाकेदार मोटू दीपावली।।
देखो-देखो मोटू ----------।।

फुरफरी नगर रोशनी से जगमगाया।
चिंगम सर बॉक्सर को साथ में लाया।।
नाचे सभी झूमकर और सबको हँसाया।
सबको बोले मोटू-पतलू हैप्पी दीपावली।।

गुरुदीन वर्मा उर्फ़ जी.आजाद
तहसील एवं जिला-बारां(राजस्थान)

कल खो दिया हमने आज के लिए

कल खो दिया हमने आज के लिए
आज खो दिया हमने कल के लिए
आज की खुशी भी गंवा दी हमने
चैन फिर भी नहीं मिला एक पल के लिए

और अच्छे के लालच में
जो पास था वह भी गंवा दिया
दूसरों को अपना बनाने की चाह में
अपनों की भी दूर पहुंचा दिया

आज ही अपना यह जानते हुए भी
कल के लिए बुनते रहे सपने
पहुंच गए थे मंजिल के बहुत करीब
खींच कर ले गए वही दूर जो थे अपने

दुनियां में बहुत हैं जिनके पास कुछ नहीं
उसी में खुश है जो किस्मत से है मिला
जो भी मिला है वही काफी है
फिर किसी से क्या शिकवा कैसा गिला

कल आज के चक्कर में सब कुछ गंवा दिया
जो मिला था वह भी नहीं रहा याद
जिंदगी बीत गई इसी कशमकश में
जो पल मिले थे खुशियों के वह भी कर दिए बर्बाद



रवींद्र कुमार शर्मा
घुमारवीं
जिला बिलासपुर हि प्र

हाइकु

1 असित रात
उम्मीद की किरण
नन्हा दीपक
2 घोर तमस
डगर प्रदर्शक
नन्हा दीपक
3 नन्हा दीपक
अमावस की रात
जगमगाता
4 शीतल वात
चमचमाते दीप
असित रात
5 गगन तले
छत की मुंडेर पै
दीपक जले



ज्योति नव्या श्री
रामगढ़ , झारखंड

कविता /श्रद्धा, ईमान के दियना जलाबो....



आ संगी सुमत के अँगना ल सजाबो,
घर के मुखटि म पहली दिया जलाबो,
गांव के माटी ल माथा म लगाबो,
छल - कपट के भाव ल मन ले मिटाओ,
सुग्घर रहे हमर मन के अँगना,
जूर मिल मंगल गीत गाबो,
अपन संस्कृति अऊ प्रकृति ल सृजित
करबो,
मया के फूल खिलाबो,
एसो के देवारी म माटी के दियना जलाबो,
दुख - सुख म हमरो हिस्सा रहैय,
भूखा ल रोटी खवाबो,
दाई - दादा के घर म होय मान,
नारी के रहैय सम्मान,
शिक्षा के दिया घर घर म बरे,
मन के अँधियारी हटे,
आ संगी सुमत के दिया जलाबो,
अँगना म मंगल गीत गाबो।

लक्ष्मीनारायण लहरे 'साहिल'
साहित्यकार ,पत्रकार सारंगढ़ ,रायपुर

मेरा दीया

बुझा जाये तूफ़ान दीये को -
ये तूफ़ां में दम नहीं है ।
मेरा एक दीया , तुम्हरे -
सूरज से कम नहीं है ।

माटी के इन दीयों ने ही -
देहरी का यहां मान रखा है ।
वरना इन महलों ने कब -
देहरी का यहां ध्यान रखा है ।

तम के आदमखोर समय में -
आंखें इनकी नम नहीं है ।

विश्वास मुझे है , सूरज उनका -
आज नहीं तो कल ढलेगा ।
दीपक उनके महलों में अब -
ढूंढे से भी नहीं मिलेगा ।

जलकर महलों को रोशन कर दें -
उनमें से हम नहीं हैं ।

चाहे कितने भी युग बदलें
-
चाहे घरों से तम छंट जाये ।
जन्म - मरण तो बिना दीये के -
शायद कोई मना यहां पाये ।

कैसे कह दें आज ग़रीब के -
घर में पसरा तम नहीं है ।

अशोक आनन
मक्सी

दीप जले तो मन भी जगमग



हर आँगन में खुशियाँ हों
प्रेम, शांति और सद्भाव की
हर घर में एक बगिया हो

अंधकार को दूर भगाकर
मन में नई उमंग सजाएँ
रूठे रिश्तों को फिर जोड़ें
प्रेम के दीपक मिलकर जलाएँ

मिट्टी के दीपों की लौ में
सपनों का संसार सजे
माँ लक्ष्मी के शुभ आगमन से
हर घर में खुशियों का वास रहे

न दिलों में कोई द्वेष रहे,
न कोई आँख उदास रहे
सबके जीवन में सुख बरसे
हर चेहरे पर मुस्कान रहे

आओ मिलकर दीप जलाएँ
मानवता का मान बढ़ाएँ
प्रेम, दया और सत्य के पथ पर
जीवन को हम सुंदर बनाएँ

दीपावली का मतलब यही है
मन से मन का मिलन रहे
दीप जले हर घर-आँगन में
हर दिल में अपनापन रहे

वर्षा वार्ष्णेय अलीगढ़

मन छूकर देखना.

अभियान समाप्ति के बाद
सोचा हुआ...
आंट किया हुआ...
समस्त काम
पूरा होने के बाद...

हिसाब किताब किया तुमने
कितनें का मन छुआ तुमने

किस-किस के संग संबंध
मजबूत किया तुमने
हाथ पकड़कर
कितने कमजोरों को
एक कदम भी
आगे बढ़ाया तुमने...

अगर...,
हिसाब किताब में
श्री संपत्ति... नाता रिश्ता...
घर आंगन... महल दो महल...
मिल जाए तो...,
अपना मन छूकर देखना
मन शायद खुश ना होगा तुम्हारा ।



मनोज
शाह मानस
नई दिल्ली

संघर्ष की राह



संघर्ष की राहों पर चलते-चलते हँसना सीख ली,
कई दफा गिरे, पर चलते-चलते उठना सीख ली।।

ज़िंदगी के हर लम्हे, हर मोड़ पर लेती इम्तिहान,
सफलता की उम्मीद लिए चलना सीख ली।।

रात कितनी भी अँधेरी क्यों न हो, ढल जाती है,
यह सोच मातम के साये पर चलना सीख ली।।

ज़िंदगी के सफ़र में कई ठोकरें मिलीं,
कदम-कदम पर सँभलना सीख ली।।

कोशिश में कोई कसर कभी नहीं छोड़ी,
जंग हारकर भी जुनून पालना सीख ली।।

ज़िंदगी में मंज़िल कोसों दूर क्यों न हो,
काम करते-करते इंतज़ार करना सीख ली।।

असफलता कोई अंतिम परिणाम नहीं,
यह स्वीकार कर कोशिश करना सीख ली।।

शिकस्त ज़िंदगी का कोई आख़िरी पड़ाव नहीं,
सफल आज नहीं तो कल सही, सोचना सीख ली।।

लक्ष्मीनारायण सेन

हर मन में भरपूर बसे खुशहाली, जीवन हो सबका ही समृद्धशाली,
भरने खुशियों से ये झोली खाली, आई है रात अमावस की काली ।

दिव्य शक्ति अर्चन की ये सिद्ध घड़ी, देने इच्छित वर देवी मातु खड़ी,
दसों दिशाओं में फैला अंधेरा, उग्र शक्तियों ने ब्रह्माण्ड को घेरा,
है तपसी सूक्ष्म साधना में खोए, अभिलाषी सुख का नया बीज बोए,
तन-मन को खूबसूरत ही सजाया, 'आनंद' अमृत जो चाहा वो पाया,
अष्ट-सिद्धि नव निधियाँ देने वाली, आई है रात अमावस की काली

सपना छोड़ चले थे राम अधूरा, हुआ वचन चौदह वर्षों का पूरा,
अयोध्यावासियों ने दुख भुलाया, अवधपुरी को बड़ा सुंदर सजाया,
मंगल गीत खुशी के सबने गाएं, स्वागत में प्रभु के दीप है जगाएं,
तब से पुनीत प्रथा ये चली आई, कार्तिक अमावस दिवाली कहलाई,
यामिनी जगमगाती दीपों वाली, आई है रात अमावस की काली ।

पाँच-दिवसीय त्यौहार को मनाएं, संग-संग अपना धर्म भी निभाएं,
सभी के सुख-समृद्धि की रख कामना, लक्ष्मी-गणेश की करें आराधना,
जगाएं एक प्रेम का दीप प्यारा, फैलाएं चहुँ दिश सुख का उजियारा,



निमित्त बन मुस्कान प्यारी खिला दें, चुपके से नई खुशियों से मिला दें,
परमतत्व से सहज जोड़ने वाली, आई है रात अमावस की काली ।

- मोनिका डागा 'आनंद', चेन्नई

महाभुजंग प्रयात सवैया

पधारो भवानी बड़ी देर से मैं निगाहें बिछाई दुखों को मिटाओ।

रखूँ धीर कैसे लगे बाण जैसे घना है अँधेरा उजाला दिखाओ।।
सहे जा रही हूँ मुझे माँ उबारो मिटे कष्ट मेरा गले से लगाओ।
करूँ नित्य सेवा बनो माँ सहारा दया की तरेरी दिलों में जगाओ।।

करूँ ध्यान तेरा जपूँ नाम तेरा मिले ज्ञान माता तुम्हीं को पुकारें।

मिले गोद तेरी कहाँ हो भवानी मिटा दो उदासी लगा दो किनारे।।

रहो साथ मेरे सदा ही शिवानी कहो मात मेरी तुम्हें ही निहारे।।
तुम्ही आस मेरी तुम्ही हो सहारा तुम्हारे सिवा कौन माता उबारे।।



संगीता पाठक
व्याख्याता, शा. उच्च. माध्य. विद्यालय, गोपालपुरी

मृदुल वाणी



आम्र-शाख पर बैठकर, कोयल छेड़े तान।
कुहू-कुहू कर बोलती, ज्यों मिश्री की खान।।
काली काया है भले, वाणी मधुर मिठास।
सब जीवों को मोहती, सबकी कोयल खास।।?
कटुक वचन सब शूल से, मधुर वचन हैं फूल।
कागा कोयल एक से, वाणी पिक अनुकूल।।
कोयल देती सीख है, सुनो जगत के लोग।
मीठी वाणी से सदा, मिट जाए सब रोग।।
प्रेम-सुधा रस घोलकर, बोलो मीठे बोल।
मीठे वचनों से बने, शब्द बड़ी अनमोल।।

शिवलाल दाँगी अध्यापक मोबा.8435408794

अब की बार ऐसी हो दिवाली



अबकी बार मनाओ ऐसी दिवाली ।
गाँव - शहर में हो जाए खुशहाली ।।
प्रदूषण से हो जाए गलियाँ खाली।
सब मिल कर मनाओ ऐसी दिवाली।।
लिछमी जी की पूजा करने वालों ।

भुरण् हत्या रोकें ऐसी हो दिवाली ।।
शोषण से मुक्त हो जाएगी अब नारी ।
रावणवृति त्याग करें ऐसी हो दिवाली।।
बुराई रोक नैतिकता से नातां जोड़ें ।

राम - राज्य आए ऐसी हो दिवाली।।
जातिवाद-साम्प्रदायिकता की जड़ काटें ।
मानवता का पाठ पढ़ें ऐसी हो दिवाली ।।
पाखण्डी -संत व् आतंक का हो जाए अंत।
'नाचीज 'प्रेम-भाव हो ऐसी मनावें दिवाली।।

मईनुदीन कोहरी 'नाचीज बीकानेरी '
मो. 9680868028